सन्त सरयू दास

कनक भवन, अयोध्या के सन्त सरयू दास का उपदेश

रामलीला का विधि-विधान

अयोध्यावासी, कनकभवन अयोध्या के पण्डित सरयूदासजी महाराज विरचित श्रीवेदार्थप्रकाश रामायण से संकलित। सेठ छोटेला लक्ष्मीचन्द बुक्सेलर, अयोध्या द्वारा काशी में मुद्रित, सन् 1926 ई.

अयोध्या के प्रसिद्ध कनकभवन के महात्मा परमहंस सीतारामशरणजी महाराज के शिष्य महात्मा सरयूदास कृत दो ग्रन्थों की सूचना मिलती है– 'उपासनात्रयसिद्धान्त' तथा 'वेदार्थ प्रकाश रामायण।' प्रथम ग्रन्थ में उन्होंने नारायण उपासना, कृष्णोपासना तथा रामोपासना के सिद्धान्तों का विवेचन किया है। रामोपासनासिद्धान्त के विवेचन-क्रम में आर्षग्रन्थों से वचनों को उद्धृत कर उनकी हिन्दी व्याख्या लिखकर सिद्धान्त प्रदर्शित किया है। इनका काल 20वीं शती का पूर्वार्ध प्रतीत होता है। इन्ही की दूसरी कृति श्रीवेदार्थप्रकाश रामायण है, जिसमें उन्होंने वाल्मीकि रामायण की रामकथा तथा विशेष रूप से तुलसीदास के रामचरितमानस को वेदोक्त सिद्धान्त के साथ अन्वित किया है। इसमें भी आर्ष ग्रन्थों से उद्धरण संकलित कर उसे व्यवस्थित कर प्रश्नोत्तर की शैली में व्याख्यायित किया गया है। इसी ग्रन्थ के आरम्भ में रामलीला के प्रसंग की व्याख्या हुई है, जिसके प्रवर्तन का श्रेय इन्होंने हनुमानजी को दिया है। यहाँ हिन्दी की वर्तमान चिह्नप्रणाली के अनुरूप वह अंश उद्धृत किया गया है।

(प्रश्न–) हे स्वामी जी, रामावतार में जो जो लीला की है सो सब लीला बालकों को राम जानकी बना करके करना चाहिये कि नहीं, सो कृपा करके कहिये।

(उत्तर–) हे शिष्य, एक समय में अगस्त्यजी महाराज शिष्यों के सहित गन्धमादन पर्वत पर गये। तहाँ पर रामकुण्ड तीर्थ में स्नान करके हनुमानजी के परम दिव्य अनन्यमय आश्रम पर गये। हनुमानजी आकर के मिले और आसन दिया। शिष्यों के सहित ऋषिराज का पूजन किया। पीछे भोजन करके बैठे, इतने ही में सन्ध्या भई। सध्यावंदनादि करके बैठे, तब तक हनुमानजी ने ऋषि-बालकों को शृङ्गार करके रामलीला रहस्य प्रारम्भ किया। सो साक्षात्कार लीला देख करके अगस्त्यजी बड़े आनन्द को प्राप्त होगये; यहाँतक कि शरीर की सुध भूलि गये। पीछे हनुमानजी की प्रशंसा की कि आप धन्य हैं जो इस प्रकार की साक्षात् रामलीला रहस्य करते हैं और हमने भी आज देखा सो हम भी धन्य हैं। इसीप्रकार के परस्पर बहुत विनय बड़ाई करके अगस्त्यजी बोले कि इस प्रकार की विधिपूर्वक यह रामलीला रहस्य बालकों को शृङ्गार करके करने के निमित्त किसने कहा है और किनसे अपने पाया है सो कहिये।

Scanned with OKEN Scanner

हनुमानजी बोले– विधि यह है कि प्रथम एक दिव्य लीलामण्डप बनाना चाहिये। उसको वंदनवार तोरण कलश केरा के खम्भ तथा पुष्पों से खूब सजाना चाहिये, जिसमें नास्तिक अवैष्णव न जाने पावे और स्त्री, बालक को सावधान से बैठावे, जिसमें शब्द न हो सो करना चाहिये और लीला करनेवाले वैष्णव हों। लीला के आचार्य नेम-धर्म से रहे, कथा कहवावे, यज्ञ करे, साधु ब्राह्मण को भोजन करवावे, जितने दिन लीला करनी हो, उतने ही दिन का विधिपूर्वक संकल्प करे। क्रीट-मुकुट की विधि से प्रतिष्ठा करे और नित्यप्रति पूजन किया करे।

तब हनुमानजी बोले कि जब रामजी परमधाम साकेत लोक को जाने लगे, तब साथ में जाने के लिये मैंने विनती की। सुनके प्रभु बोले कि तुम अभी यहीं पर रहो और विप्र बालकों को मैनसिल से शृङ्गार करके हमारी लीला किया करो। हम इहाँ पर साक्षात्कार दर्शन दिया करेंगे। तबसे हम यह लीला करते हैं और साक्षात्कार दर्शन होता रहता है। यह उपदेश रामजी का है।

पुनः अगस्त्यजी बोले कि केवल आपही के लिये उपदेश है कि सबके लिये। हनुमानजी बोले कि सबके लिए आज्ञा है, परन्तु विधि से करना चाहिये।

अगस्त्यजी बोले— विधि क्या है?

हनुमानजी बोले— विधि यह है कि प्रथम एक दिव्य लीलामण्डप बनाना चाहिये। उसको वंदनवार तोरण कलश केरा के खम्भ तथा पुष्पों से खूब सजाना चाहिये, जिसमें नास्तिक अवैष्णव न जाने पावे और स्त्री, बालक को सावधान से बैठावे, जिसमें शब्द न हो सो करना चाहिये और लीला करनेवाले वैष्णव हों। लीला के आचार्य नेम-धर्म से रहे कथा कहवावे, यज्ञ करे, साधु ब्राह्मणको भोजन करवावे, जितने दिन लीला करनी हो, उतने ही दिन का विधिपूर्वक संकल्प करे। क्रीट मुकुट की विधि से प्रतिष्ठा करे और नित्यप्रति पूजन किया करे। हे शिष्य, और भी (हनुमत्-संहिता) में लिखा है कि विजयदशमी (दशहरा) के दिन राजा लोग सब अपने फौजों को तैयार कर और लीला मूर्तिके आगे रथ पर सवार कराकर दक्षिण यात्रा करे। खूब धूमधाम से और रामजीकी सहायता के लिये भक्तिभाव से कि मैं श्रीरामजीका सेवक हूँ, तहाँ दक्षिण जाकर रावण के नामसे अस्त्र शस्त्र चलावे रावण के स्वरूप बना के। यह प्राचीन धर्म है। फिर लौटकर नीलकंठ का दर्शन और शमी (छोंक) वृक्षकी पूजा करके नगर में आवे। इस प्रकार से सब राजाओं को करना चाहिये। सो कुछ-कुछ अब भी राजपूताने में करते हैं लीला स्वरूप नहीं बनाते है परन्तु सेनाओं को सजा के दक्षिणा-यात्रा करते हैं यह बात सर्वत्र प्रसिद्ध है परन्तु यह नहीं जानते हैं कि विजयदशमी के दिन दक्षिणयात्रा करना क्या है और दशहरा में रामलीला होना यह तो सर्वत्र प्रसिद्धही है। इससे लीला करना शास्त्र प्रमाण है परन्तु विधि और भावसे करना चाहिये जैसा कि शास्त्र में प्रमाण है नही तो भारी दोष कहा है।

प्रश्न— हे स्वामी जी, आज काल के जो लीलाधारी और रहस्यधारी लोग घर-घर गाँव-गाँव लीला करते हैं, सो करना चाहिये कि, नहीं।

[उत्तर] हे शिष्य, भगवत् लीला करनेका कोई नियम नहीं है कि अमुक ही स्थान में करे चाहे, जहाँ जिस देश गाँव में करे, परन्तु भाव से करे। परलोक से विमुख होकर न करे लोगों के उपदेश के लिये करे, काहे से कि लीला से उपदेश विशेष है अर्थात् जहां लीला होती है, तहाँ हजारों मनुष्यों के भी होने से

Scanned with OKEN Scanner

राममय हो जाता है। इससे लीला करना भारी उपदेश और सबको मालूम पड़ता है कि रामजी ऐसे रहे ताते लीला करना उचित है परन्तु अन्याय होकर न करे। और इस प्रकार के मनुष्य लीला में न जाने देवे।

यथा शिवसंहितायां पंचमपटले 15 अध्याय अगस्त्यजी से श्रीहनुमानजी का वचन

वर्जयेन्म्लेच्छचाण्डालान् भक्तिशून्यान्दुराशयान्।
हासकान्दूषकांश्चौरान् हिंस्राञ्छूद्रान्मलीनसान्॥1॥
शैवाञ्छोक्तान् खलान् पापान्पापण्डानशुचिर्नरान्।
मूर्खान् कौतुकिनो धूर्तानन्यदेवरतानपि॥2॥
दुर्भक्ष्यान् निन्दकान् बाह्यान् मद्यमांसरतानपि।
नास्तिकान् हेतुकान् क्रू रानन्यानपि संत्यजेत्॥3॥

अर्थ— म्लेच्छ चाण्डाल जो रामभक्त नहीं हैं, दुराशय अर्थात् दुष्टभावना वाले, हंसी मसखरी वाले, दूषण देनेवाले, चोर, जीव-हत्यावाले शूद्र, मलिन-वृत्तिवाले शैव, शाक्त, दुष्ट, पापी, पाखण्ड, अपवित्र, मनुष्य, मूर्ख, खेल-तमाशे वाले, धूर्त, अन्य देवताओंकी भक्ति करनेवाले अभक्ष्य अर्थात् लशुन, पियाज, गाजर, शलगम, गोभी, सोया, पलाकी, गांजा, भांग, तमाखू, अफीम इत्यादि के खाने-पीने वाले, निंदा करनेवाले सर्व धर्मों से जो बाह्य है। तथा मद्य पीने वाले, मांस खानेवाले, नास्तिक तर्कवाले, क्रूर इन सबको श्रीरामलीला के अन्दर न जाने देवे केवल भक्तिवान् पुरुषों को जाने देवे॥

नैते योग्याः संप्रवेष्टुं रामैकान्तिककेलिषु।
अन्यथाकारको भ्रंश्येद्रामकोपेन भक्तितः॥4॥
परमैकान्तिनो यत्र पापदोषविवर्जितः।
गानं भगवतः कुर्युः संनिधत्ते तु यद्धरिः॥5॥

अर्थ— पूर्वोक्त सबको लीला रहस्यके भीतर न जाने देबे। यदि इन सबको लीला स्थानमें जाने देवे तो लीला के करनेवाले व्यास बाबा श्रीरामजी के महा-क्रोध करके भक्तिमार्ग से पतित होकर 21 अथवा 64 पीढ़ी को साथ लेकर मजे में घोर नरक में जन्म-जन्म गोता लगायेंगे। दुष्टों का उद्धार कभी भी नहीं होता है।

यथा—

लोकहु वेदविदित कवि कहहीं।
रामविमुख थल नरक न लइही॥

इससे लीलाधारी को चाहिये कि विचार से काम करे। जहाँ परम एकांत स्थान हो पाप दोष से वर्जित हो, उस स्थान पर भगवल्लीला गाना बजाना करे। काहे से कि लीला करना भारी यज्ञ है। शुद्ध भूमि में होना चाहिये। उस स्थान पर स्वयं प्रभु आकर प्राप्त होते हैं और लीलामूर्ति में प्रवेश करते हैं और लीला स्वरूप विचार से। ऐसा बनावे यथा—

द्विजराजकुलोद्भूतं सुरूपं सुमुखादिकम्।
सुवर्णं शुभगं चारु चेष्टं मधुरभाषिणम्॥6॥
दृष्टिचित्तहरं पुंसां शिक्षादक्षं सुलक्षणम्।
कुमारं वा किशोरं वा रोगदोषविवर्जितम्॥7॥
पूजयेद्रामबुद्ध्यैव विहीनं त्वपलक्षणैः।
यदस्मिन् राघवः स्थित्वा क्रीडिष्यति प्रियायुतः॥8॥

अर्थ— द्विजराज अर्थात् उत्तम ब्राह्मण सारस्वत 1, कान्यकुब्ज 2, गौड़ 3, मैथिल 4, उत्कल 5, तैलंगी 6, द्राविडी 7, करणाटकी 8, महाराष्ट्र 9, गुरु राती नागर ब्राह्मण 10, इन दशों ब्राह्मणों में श्रेष्ठ चाहे, जिसके कुलमें उत्पन्न हो, सुन्दर मुखादि और सुन्दर वर्ण हो। भाव यह है कि रामजी के भरतजी के स्वरूप श्याम हो और लक्ष्मणजी, शत्रुघ्नजी गौर हो, तैसेही श्रीजानकी भी गौरांगी हो और सब स्वरूप शुभ नाम सुघर हो, बेडौल नहीं, पवित्र चेष्टा हो, मधुर बोलने वाले हो कठोर क्रूर बोलनेवाले नहीं॥

दृष्टि जिनकी ऐसी बाँकी हो कि जिधर देखें उधर भाविकों का चित्ताकर्षण हो जावे और शिक्षा में प्रवीण ही सुन्दर लक्षण करके युक्त हो अवस्था जिनकी 8 वर्ष से 16 वर्ष पर्यंत हो, अधिक न हो, कोई प्रकार का रोग दोष भाव काणे खोठे कूबडे लंगड़े लूटे गंगा बहिरा गजा कुक्कुरदंता विशेष अङ्ग वाले नहीं मात्र कोई

Scanned with OKEN Scanner

प्रकार के ऐव नहीं यदि ऐसी स्वरूप बनावे तो लीलाधारी नरक में जावे और देखने वाला भी दोषभागी हो इससे दिव्य स्वरूप बनावे ॥2॥

जो स्वरूप बनावे वह सब कुलक्षणों से रहित हो उनस्वरूपों कों साक्षात् सीताराम ही जानके पूजन करे। यदि न पूजे दूसरा भाव राखे भाव मनुष्य जाने तो नरक के अधिकारी हो इससे अवश्य भाव राखे जिसमें श्रीसीतारामजी स्वरूपों में स्थित होकर क्रीडादि भाव करें इससे निरादर न करे।

तैलेनाभज्य चूर्णेन समुद्वर्त्य च वारिभिः।
पवित्रैः स्नापयेद् विद्वान् मन्त्रोच्चारणपूर्वकम्॥ 9॥
गव्यैः पञ्चभिः स्नाप्य तुलसीदर्भमिश्रितैः।
ऊष्णेन वारिणा भूयः शीतलेन च मन्त्रतः॥ 10॥
पीताम्बरयुगं दद्याद् ब्रह्मसूत्रं च सुन्दरम्।
रोचनाकुङ्कुमाप्तेन कस्तूरीतिलकेन च॥ 11॥

अर्थ– सर्वसुगन्ध औषधियों को चूर्णकर उबटन याने (वेसन) के साथ मिलाकर तेलयुक्त हल्दी के साथ जलमें मिलाकर सर्वांग में उबटन लगाकर स्वरूपों को पवित्र जबसे मूलमंत्र को पढ़कर विद्वान् पण्डित लोग स्नान करावें। पीछे तुलसीदलको मिलाकर पंचगव्य से स्नान कराकर फिरमी उष्ण (गर्म) जनसे अथवा शीतल जल से मन्त्र पढ़कर अच्छे प्रकार से स्नान कराकर दो पीतांबर और सुंदर पीतरंगका यज्ञोपवीत देना चाहिये और श्रीयुक्त कस्तुरी केशर मिलाकर–

तिलकेनाप्यलं कुर्य्याद् विन्दुं च केशवेश्मना।
आचामयेज्जलं शुद्धं रामनामानुकीर्त्तयन्॥ 12॥
श्रीरामं तत्र सन्ध्यायेदात्मानं स्वतएव तम्।
रामस्य मन्त्रमुन्यादीन्न्ययेत्तस्य यथोचितम्॥ 13॥
अङ्गेषु चाङ्गदेवांश्च रामोऽस्मीति च भावयन्।
रामात्मा एव एवैति वेदान्तविदितं मतम्॥ 14॥
धूपयेद् दीपयेत् पश्चाद् भोजयेदमृतं च तम्।
नीराजनमुखामोदं ताम्बूलादि प्रदाय च॥ 15॥
रामोयमिति तं भूयो लालयेन्नतु कोपयेत्।
तद्द्वारा भगवान् रामः साक्षाद्देवः समीहते॥ 16॥

अर्थ– सुन्दर ऊर्ध्व पुण्ड्रतिलक करना विदुके सहित और मैनशील (मुर्दाशंख) से कपोलादि शृङ्गार करना चाहिये काकपक्ष (जुलुफ) की रचना कर सर्वाङ्ग में भूषण धारण करावे और कीट मुकुटादि को धारण कराकर शुद्ध जल से आचमन करावे श्रीरामनाम का कीर्तन करे करावे जिसमें कल्याणहो॥16॥

श्रीराममंत्र षडक्षर से यथोचित विद्वान् लोग सर्वांग का संस्कार करे और वहाँ लीलास्थान में श्रीरामजीका ध्यान करे स्वरूपों को चाहिये कि अपने आत्माको स्वयं श्रीरामजी करके मानें और यही भाव लीला के आचार्य महंत सन्त पंडित व्यास लीलाकर्ता उपदेश करे स्वरूपों को कि आप स्वयं सीतारामजी हैं शान्ति क्षमा दयादिगुण उपदेश करे परस्पर स्वरूपों को भावोपदेश करे। अंग में अंग देवताओं को भिन्न-भिन्न माने सबके भावना करे अपने को रामही जाने कि राम मैं ही हूँ। इस तरह का भाव सदैव राखे जिसमे सब भाविकों को श्रीरामजी के ही भाव होजाये और देखने वालेको व करने वालेको सच्चा भाव रखना चाहिये क्योंकि भाव ही प्रधान है। देखो, सती जीने सीताजी का रूप धारण किया, उसी समय में परमभक्त शिरोमणि श्रीशंकरजीने सतीको त्याग कर दिया कि

जो अब करउ सतीसन प्रीती।
मिटे भगति पथ होइ अनीती॥

भाव स्वामिनी भाव माना नहीं तो सती कुछ सीता नहीं होगई केवल योगीराज श्रीशंकरजीने सूक्ष्म से सूक्ष्म भक्ति भावको दिखाया है। हे शिष्य, यह प्रसंग रामायण में ही सूक्ष्म है इससे लीलानुकरण भी सिद्ध होता ताते लीला स्वरूपों को अवश्य मानना चाहिये। यदि भक्तिभाव हो नहीं तो दुष्टों के लिये कुछ नहीं है, स्वरूप में भाव करना यह मत वेदांतशास्त्र का प्रधान मत है भावलीला करना शास्त्र प्रमाण है कल्पित न जाने यदि

Scanned with OKEN Scanner

कल्पित माने तो नरक वास हो। धूप दीपादि से विधिपूर्वक पूजन करें सुन्दर स्वरूपों को भोजन करावे पंचनीराजन करके मुखशुद्धिके लिये तांबूलादि देवे और रामही हैं ऐसा जाने लालन पालन करे क्रोध नहीं करे। यदि स्वरूपों पर क्रोध करके मारे पीटे तो कोटि पुरुषा नरक जाय, इसमें संदेह नहीं। काहे से कि लीलास्वरूपों के द्वारा साक्षात् श्रीरामदेव प्राप्त होते हैं इससे सत्यभाव से करना चाहिये।

(प्रश्न—) हे स्वामीजी, नीराजन किसको कहते हैं और कैसे किया जाता है सो कहिये।

(उत्तर) हे शिष्य, पंचनीराजन शास्त्र में ऐसा कहा है। यथा—

पञ्चनीराजनं कुर्य्यात् प्रथमं दीपमालया।
द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौतवाससा॥
चूताश्वत्थादिपत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम्।
पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथाविधिः॥

अर्थ— पञ्चप्रकार के नीराजन करना प्रथम दीपमाला से दूसरा शंख में जलभर स्वरूपों पर घुमाकर बाहर फेंक देना इस शंख का जल शरीर पर गिरे तो ब्रह्महत्यादिपाप नष्ट होता है। तीसरा धोती अथवा पीतांबर से चौथा आम के पोपल के पत्रोंसे करे। पांचवां नीराजन नम्रतापूर्वक साष्टांग प्रणाम करना। भाव लीलास्वरूपों को साटांग भी करे प्रसाद भी ले। केवल भाव है।

(प्रश्न) हे स्वामीजी, शंख से नीराजन करना और शंखोदक का माहात्म्य कहां लिखा है।

उत्तर—

ततश्च सजलं शङ्खं भगवन्मस्तकोपरि।
त्रिभ्रामयित्वा कुर्वीत पुनर्नीराजनं प्रभोः॥
शङ्खोदकं हरेर्भुक्तं निर्माल्यं पादयोर्जलम्।
चन्दनं धूपशेषं च ब्रह्महत्याऽपहारकम्॥
योऽश्नाति तुलसीपत्रं सर्वपापहरं शुभम्।
तच्छरीरान्तरस्थापि पापा नश्यन्ति तत्क्षणात्॥

अर्थ— तिसके पीछे जसके सहित शंखको भगवत् के शिरपर तीनवार घुमाकर फेंक देबे यह भी नीराजन है। शंख के जल भगवत् प्रसाद चरणोदक भगवत् पूजन का शेष (बचा) हुआ चंदन धूप सब ब्रह्महत्या हरनेवाला है। जो तुलसी-दल खाते हैं उनके भीतर के भी पाप सब नाश हो जाते हैं इससे तुलसीदल खावे।

अब श्रीजानकीजी के स्वरूप बनाने को कहते हैं। यथा शिवसंहितायाम्—

सर्वलक्षणसम्पन्नमपलक्षणविवर्जितम् ।
कुमारं जानकीत्येव संस्कुर्य्याद्धि विधानतः॥
जानकीमन्त्रमुन्यादीन्यस्येत्तस्य कलेवरे।
भोजयेल्लालयेत् तत् तद् रामदेवीति तां बुधः॥
कुमारारूपसम्पन्ना नृत्यगानविचक्षणाः।
अपलक्षणशून्या ये द्विजानां शुचयोनघाः॥
संभाव्यास्ते सखीत्येन जानक्यानुभाविताः।
भोजिता धूपिताः सम्यक् शिक्षितास्तोषिता धनैः।

सर्वलक्षण करके युक्त हो और कुलक्षण करके विवर्जित हो ऐसा कुमार 8 वर्ष के स्वरूप जानकी जीके ही निश्चयपूर्वक उनको विधानसे संस्कार करना और जानकीजी के मन्त्र से जानकीजी के स्वरूपों को और रामजी के रामजी के स्वरूप को मुनिलोग विद्वान् लोग संस्कार नाम प्रतिष्ठा करें और तिनके शरीर में उनर मन्त्रों को स्थापित करें। विधिपूर्वक जिसमे भगवत् का भावहो उनको पण्डित लोग भोजन करावे पालन करें अर्थात् रामप्यारी जान करके सब प्रकार से आदर सहित भाव करे॥ 4॥

और रूपगुण करके युक्त नृत्यगानमें चतुर अपलक्षण करके शून्य ब्राह्मण में पवित्र पापों से रहित ऐसा कुमार बालक 8 वर्ष के स्वरूप जानकीजी के आज्ञानुकूल सखी बनावे सबको सब प्रकार से भोजन से धूप दीपादि से पूजन करे और शिक्षा देवे कि आप अपने को रामजी जानो, जानकीजी जानो, सब पर दया

Scanned with OKEN Scanner

करो। काम, क्रोध, लोभ, मोह छोड़ दो। शान्ति, क्षमा, दया, वात्सल्यादि गुणको धारण करो इसी प्रकार के दिव्यगुण शिक्षा करे और धन द्रव्यादि देकर संतुष्ट करे जिसमें कोई को दुःख न हो सो करे।

हे शिष्य इसी प्रकार से आगे और भी बहुत कहा है कि स्वरूपों पर क्रोध न करे, दंड न देवे, दुःख न देवे। यदि कोई प्रकार का दुःख देवे तो जन्म —जन्म अखण्ड नरक में रोवै, कभी उद्धार नहो, भगवद्द्रोही नास्तिक है, महा-चाण्डाल है जो स्वरूपों को क्लेश देता है और खोटी दृष्टि से देखता है उसको वार-बार धिक्कार है जो द्रव्य के वास्ते स्वरूपों को दुःख देते हैं और ब्राह्मण छोड़कर जो अन्य जाति को स्वरूप बनाते हैं सो महादुष्ट नरकगामी है गुरुद्रोही है, भगवद्द्रोही है।

हे शिष्य, पाँच ब्राह्मण जो हैं याने मागधी (झूठी प्रशंसा गानेवाले चारण)1, मथुरा के चौबे लोग (व्यापार करनेवाले), 2 शाकद्वीपी 3 (शुल्क लेकर चिकित्सा करनेवाले), सनाढ्य 4, जोषिक 5, तथा गंगापुत्र महापात्र (तिलोदक दान लेनेवाले) भाट, कथिक इन सबको स्वरूप बनाना दोष है। बनानेवाले नरक जावे और शत्रु नीच लोग जो लीला करते हैं सो नरकगामी हैं। हे शिष्य, यह कथालीला प्रकरण (शिवसंहिता) के पंचमपटल में 15 से अष्टादशाध्याय 18 पर्यन्त वर्णन है।

गंधमादन पर्वत पर हनुमानजी ने अगस्त्य ऋषिसे कहा है तबसे रामलीला भूमंडल में प्रचार है और प्रेमी लोग करते हैं। यही लीला कृष्णावतार में प्रद्युम्नादि यादवने वज्र नाम दैत्य के यहांपर रामनाटक किया है सो यह कथा हरिवंश पुराण के विष्णुपर्व 95 अध्यायमें प्रसिद्ध है तिससे थोरा लिखते हैं विशेष देखलेना। यथा प्रमाण—

रामायणं महाकाव्यमुद्दिश्यं नाटकीकृतम्।
जन्मविष्णोरमेयस्य राक्षसेन्द्रवधेप्सया॥ 51॥
लोमपादो दशरथ ऋष्यशृङ्गं महामुनिम्।
शान्तामप्यानयामास गणिकाभिः सहानघ॥ 52॥
राम-लक्ष्मण-शत्रुघ्नो भरतश्चैव भारत।
ऋष्यशृङ्गञ्च शान्ता हि तथा रूपैर्नटैःकृताः॥53॥
तत्कालजीविनो वृद्धा दानवा विस्मयं गताः।
आचचक्षुश्च तेषां वै रूपतुल्यत्वमच्युतः॥ 54॥
संस्काराभिनयौ तेषां प्रस्तावानां च धारणम्।
दृष्ट्वा सर्वे प्रवेषं च दानवा विस्मयं गताः॥55॥ इति

अर्थ — रामायण महाकाव्य जो वाल्मीकीय रामायण है उसको यथार्थ रीति नाटक की गीति करके दिखाने लगे जिसमें अप्रेमय विष्णु भगवान ने राक्षस के वध करने की इच्छा करके देवताओं को कहा। प्रथम रोमपाद राजा दशरथजी ऋषिशृङ्ग महामुनि को दिखाया रोमपाद के पुत्री शांता के निमित्त वेश्या जैसे महा घोरवन में जा करके शृङ्गी ऋषिजी को आनती भई सो सब नाटक किया और राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न शृङ्गी ऋषि शांता इन सबका जैसा रूप है तैसा रूप नट लोग नाटक करनेवाले सो सब किया उस समय में बस गुणी लोग वृद्ध लोग दानव लोग आश्चर्य को प्राप्त होगये और परस्पर तिन सबके रामलीला देख करके चक्षु ले याने इशारे से बात करने लगे कि ऐसा कभी नहीं देखा॥

तिन सबके स्वरूप बनाना और बोलचाल हाव भाव छविछटा शीघ्रता सब देख करके दानव लोग विस्मय को प्राप्त हो गये और बहुत से धन द्रव्यादि दिये सो विस्तार से आगे वर्णन है। उसीको गोस्वामी ओने एक चोपाई में प्रमाण दिया है। यथा—

खेलउँ तहाँ बालकन्ह मीला।
करउँ सकल रघुनायकलीला॥

इत्यादि उत्तरकाण्ड में कहा है।

इससे हे शिष्य, रामलीला करना शास्त्रप्रमाण है। अवश्यमेव करना चाहिये परन्तु भावसे करना कल्याणकारक है नहीं तो घोर नरक तो हई है।

***

Scanned with OKEN Scanner